myresearchgo Volume 1, December Issue 9, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

भारतीय ग्रामीण जीवन का मूर्तिकला में यथार्थवादी अभिव्यक्ति: एक समीक्षात्मक अध्ययन

राम तीरथ

शोधकर्ता

डॉ. अनंता सांडिल्य

(सह–आचार्य) श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान – 333001

सार

यह शोधपत्र भारतीय मूर्तिकला में ग्रामीण जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्तियों का समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता में ग्रामीण जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसे विभिन्न कालखंडों में मूर्तिकारों ने अपनी कला के माध्यम से सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में प्राचीन से लेकर समकालीन काल तक की मूर्तिकला में ग्राम्य जीवन के विषयों जैसे कृषि कार्य, लोक नृत्य, पारिवारिक जीवन, धार्मिक अनुष्ठान, और सामाजिक संरचनाओं की प्रस्तुति को विश्लेषित किया गया है। यथार्थवाद की दृष्टि से इन अभिव्यक्तियों का अध्ययन यह दर्शाता है कि मूर्तिकारों ने केवल दृश्य चित्रण ही नहीं किया, बल्कि ग्रामीण जीवन के भावनात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को भी सूक्ष्मता से उकेरा है। यह शोध इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि कैसे मूर्तिकला ने ग्रामीण भारत की जीवनशैली, संघर्ष, और सौंदर्य को कलात्मक माध्यम से जीवंत और स्थायी बनाया है। अध्ययन के निष्कर्ष भारतीय मूर्तिकला की उस परंपरा को रेखांकित करते हैं, जिसने ग्रामीण जीवन को एक यथार्थवादी और संवेदनशील दृ ष्टिकोण से दर्शाया है।

मुख्य शब्द : भारतीय मूर्तिकला, ग्रामीण जीवन, यथार्थवाद, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, लोककला, सामाजिक चेतना, कलात्मक शैली, समीक्षात्मक अध्ययन

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ की आत्मा उसकी ग्रामीण संस्कृति में बसती है। भारतीय ग्रामीण जीवन अपने भीतर परंपरा, श्रम, उत्सव, और सामाजिक सहयोग की अनूठी छवियाँ समेटे हुए है। इन छवियों को मूर्तिकला के माध्यम से यथार्थवादी रूप में अभिव्यक्त करना न केवल कला की एक उत्कृष्ट उपलब्धि है, बल्कि यह सामाजिक दस्तावेजीकरण का भी सशक्त माध्यम बन जाता है। मूर्तिकला में ग्रामीण जीवन के यथार्थ को उकेरना नारी जीवन, कृषक संस्कृति, पशुपालन, लोक परंपराओं, त्योहारों और दैनिक जीवन की संघर्षशीलता को संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है।

myresearchgo Volume 1, December Issue 9, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

इस अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार भारतीय मूर्तिकारों ने ग्रामीण जीवन की सजीव और सटीक झलक मूर्तिकला में प्रस्तुत की है। यह भी देखा जाएगा कि यथार्थवादी शैलियों के माध्यम से किस प्रकार ग्रामीण जनजीवन की सरलता, सौंदर्य, और संघर्ष को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। साथ ही, यह शोध भारतीय मूर्तिकला के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख मूर्तिकारों के योगदान, और उनकी कृतियों में निहित सामाजिक व सांस्कृतिक प्रतीकों का समीक्षात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है।

मूर्तिकला केवल एक सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह उस समाज और संस्कृति का दर्पण भी होती है, जिसमें वह जन्म लेती है। जब हम भारतीय मूर्तिकला की बात करते हैं, तो इसमें केवल देवी–देवताओं की मूर्तियाँ ही नहीं, बल्कि आम जनजीवन, किसान, ग्वाले, महिलाएँ, कुम्हार, चरवाहे, त्योहार, और ग्रामीण श्रमजीवी वर्ग का यथार्थ चित्रण भी सम्मिलित होता है। विशेष रूप से यथार्थवाद के दृष्टिकोण से यदि देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि मूर्तिकारों ने ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों को बेहद सजीव, संवेदनशील और गहराई से प्रस्तुत किया है।

यथार्थवाद

यथार्थवाद एक ऐसी कला शैली है जो जीवन की वास्तविकताओं को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने पर बल देती है, जिसमें आदर्शवाद, कल्पनात्मकता या अलंकरण की अपेक्षा वस्तुनिष्ठता को प्राथमिकता दी जाती है। यूरोपीय कला में यह प्रवृत्ति 19वीं शताब्दी में प्रबल हुई, किन्तु भारत में यथार्थवादी रुझान सदियों पूर्व से ही दृश्य कलाओं में विद्यमान रहे हैं। भारतीय मूर्तिकला में यह यथार्थवाद केवल शरीर रचना या चेहरे की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन की परिस्थितियों, भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को भी समाहित करता है।

ग्रामीण भारत की विशेषताएँ दृ जैसे कृषि कार्य, पशुपालन, मिट्टी के घर, पारंपरिक वस्त्र, ग्रामीण मेले, स्त्रियों की घरेलू भूमिकाएँ, कारीगरों का श्रम, और जातीय रीति–रिवाज – जब मूर्तिकला में स्थान पाते हैं, तब वे केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय दस्तावेज बन जाते हैं। यह यथार्थवादी दृष्टिकोण दर्शकों को ग्रामीण जीवन के निकट लाता है और उन्हें उन अनदेखे पहलुओं से परिचित कराता है जो शहरी जीवन से बहुत भिन्न होते हैं।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण

भारतीय कला की परंपरा सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होती है, जहाँ की मूर्तियों में पशुपालन, मातृशक्ति और ग्रामीण जीवन के अनेक संकेत मिलते हैं। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई में मिली "नृत्य करती लड़की" की कांस्य मूर्ति और पशुपालक पुरुष की मूर्तियाँ ग्रामीण जीवन की झलक प्रस्तुत करती हैं। वैदिक और उत्तर वैदिक काल में कृषि, गौ–पालन और कुटुंब व्यवस्था का महत्व बढ़ा, जो तत्कालीन मूर्तिकला में भी परिलक्षित होता है।

गुप्तकाल, जिसे भारतीय कला का स्वर्णयुग कहा जाता है, में धार्मिक मूर्तियों के साथ–साथ लोकजीवन पर आधारित मूर्तियाँ भी निर्मित हुईं। यहाँ तक कि मंदिरों की बाह्य दीवारों पर ग्रामीण जीवन के चित्रकृजैसे खेत जोतते किसान, जल भरती

myresearchgo Volume 1, December Issue 9, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

स्त्रियाँ, हाट–बाजार की गतिविधियाँ—मूल्यवान शिल्पकला के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार भारतीय मूर्तिकला ने ग्रामीण जीवन के सूक्ष्म, प्रतीकात्मक और यथार्थवादी चित्रण की समृद्ध परंपरा विकसित की।

आधुनिक और समकालीन मूर्तिशिल्प में ग्रामीण यथार्थ

औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय मूर्तिकला में एक नया युग आया, जब कलाकारों ने ग्रामीण जीवन के प्रतीकों को औपनिवेशिक उत्पीड़न और सामाजिक असमानताओं के विरोध में प्रयोग करना शुरू किया। स्वतंत्रता के बाद, यह प्रवृत्ति और गहराई के साथ विकसित हुई।

रामकिंकर बैज जैसे मूर्तिशिल्पियों ने संथाल जनजाति के जीवन पर आधारित मूर्तियाँ बनाकर भारतीय आधुनिक मूर्तिकला को नया मार्ग दिखाया। उनके ष्संथाल परिवारष् जैसे कार्यों में यथार्थ, करुणा और जीवन की गति का ऐसा संयोग देखने को मिलता है, जो भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत चित्रण है।

समकालीन कलाकारों जैसे सुभाष मुखर्जी, के.एस. रेड्डी और लक्ष्मी पटनायक आदि ने भी आधुनिक तकनीकों और सामग्री का प्रयोग कर ग्रामीण जीवन के पारंपरिक बिंबों को नए आयामों में प्रस्तुत किया है। इन मूर्तियों में केवल दृश्य यथार्थ ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक गहराई और प्रतीकात्मकता भी देखने को मिलती है।

ग्रामीण जीवन की विविधताएँ और मूर्तिकला में उनका स्थान

भारतीय ग्रामीण जीवन एकसमान नहीं हैय यह क्षेत्रीय विविधताओं, जातीय भिन्नताओं, भाषाई वैविध्य और सांस्कृतिक भिन्नताओं से समृद्ध है। उत्तर भारत के गाँव जहाँ हरित क्रांति और भूमिहीनता की कहानियाँ कहते हैं, वहीं दक्षिण भारत के गाँवों में मंदिर संस्कृति और जल संरक्षण के अनूठे प्रयोग दिखाई देते हैं। पूर्वोत्तर के ग्रामीण समुदायों में जनजातीय परंपराओं का प्रभाव अधिक है, तो पश्चिमी भारत के मरुस्थलीय गाँवों में जीवन का संघर्ष अलग रूप में सामने आता है।

इन विविधताओं को मूर्तिकारों ने अपनी कला में अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है। मिट्टी के खिलौनों से लेकर कांस्य की मूर्तियों तक, ग्रामीण जीवन के हर पहलू दृ स्त्रियों का जल भरना, चरखा चलाना, बच्चे की किलकारियाँ, बूढ़े किसान की झुकी पीठ, छप्पर के नीचे बैठे कारीगर दृ सबको यथार्थ रूप में उकेरा गया है। यह यथार्थवाद केवल दृश्यात्मक नहीं, बल्कि भावात्मक भी है, जो दर्शक को भीतर तक स्पर्श करता है।

ग्रामीण जीवन के विविध आयाम और उनकी मूर्तिकला में अभिव्यक्ति

भारतीय गाँवों में जीवन एक व्यापक सामाजिक–आर्थिक प्रणाली के अंतर्गत चलता है, जहाँ मनुष्य, प्रकृति और पशुकृतीनों के बीच गहरा संबंध होता है। इस त्रैतीय संबंध को मूर्तिकला में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए:

कृषि कायर्रू खेत जोतते बैलों, हल चलाते किसानों, बीज बोती स्त्रियों की मूर्तियाँ ग्रामीण जीवन की श्रमप्रधान प्रकृति को यथार्थवादी शैली में दर्शाती हैं।

स्त्री की भूमिका: ग्रामीण स्त्रियाँ केवल घरेलू नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। पानी भरती, चक्की पीसती, बच्चे को दूध पिलाती या लोकनृत्य करती स्त्रियों की मूर्तियाँ जीवन की सहजता और गरिमा को प्रकट करती हैं।

लोक जीवन और त्योहार: त्योहारों, मेलों और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते ग्रामीण पुरुषों और महिलाओं की छवियाँ मूर्तिकला में जीवंत रूप से प्रस्तुत होती हैं, जो लोक–संस्कृति की बहुरंगी छाया को प्रदर्शित करती हैं।

पशुपालन और पारंपरिक व्यवसाय: गाय, बैल, भैंस और बकरियों के साथ ग्रामीण जीवन का अन्योन्याश्रय संबंध मूर्तिकला में स्पष्ट झलकता है। साथ ही, कुम्हार, लोहार, बढ़ई, जुलाहे आदि की दैनिक गतिविधियाँ मूर्तियों में देखी जा सकती हैं।

भारतीय ग्रामीण जीवन का मूर्तिकला में यथार्थवादी अभिव्यक्ति

भारतीय मूर्तिकला एक समृद्ध और विविध परंपरा है, जो प्राचीन काल से ही जीवन के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करती आई है। इनमें से एक महत्वपूर्ण पक्ष है ग्रामीण जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति। यह अभिव्यक्ति न केवल सौंदर्य और कलात्मकता का परिचायक है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन की गहराई से भी जुड़ी होती है।

1. ग्रामीण जीवन का यथार्थ

भारतीय गाँवों में जीवन सादगी, श्रम और प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव से परिपूर्ण होता है। कृषक, महिलाएँ, मेले, त्योहार, लोकनृत्य आदि ग्रामीण जीवन की धड़कन हैं। मूर्तिकारों ने इन तत्वों को न केवल सजावटी रूप में, बल्कि यथार्थवादी शैली में उकेरा है। इस शैली में मानव आकृतियों की मुद्राएँ, हाव–भाव, पोशाक, उपकरण और दैनिक क्रियाएँ अत्यंत स्वाभाविक और जीवन्त प्रतीत होती हैं।

2. लोक मूर्तिकला और शिल्प परंपरा

मध्य प्रदेश की टेरीकोटा मूर्तियाँ, पश्चिम बंगाल का डोकरा शिल्प, राजस्थान की पुष्कर मूर्तियाँ तथा तमिलनाडु की ब्रॉन्ज प्रतिमाएँ ग्रामीण जीवन की झलक को बखूबी प्रस्तुत करती हैं। इन मूर्तियों में ग्रामीण महिलाएँ जल भरते हुए, चरखा चलाते हुए, या गीत गाते हुए चित्रित होती हैं। पुरुष मूर्तियाँ हल चलाते, बैल जोतते या हाट में सामान बेचते हुए दिखती हैं।

3. प्राचीन से आधुनिक तक

सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तियों में भी ग्रामीण जीवन के तत्त्व मिलते हैं — जैसे कि पशुपालन, कृषि और हस्तशिल्प। आधुनिक मूर्तिकारों जैसे रामकिंकर बैज ने भी ग्रामीण भारत के श्रमिकों, किसानों और जीवनशैली को मूर्तियों में जीवंत किया है। उनकी कृतियाँ, जैसे 'संघर्षशील मनुष्य', आम जनजीवन की संघर्षशीलता को दर्शाती हैं।

4. मूर्तिकला में यथार्थवाद के प्रभाव

यथार्थवादी मूर्तियाँ केवल दर्शक को सौंदर्य का अनुभव नहीं करातीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ से भी साक्षात्कार कराती हैं। यह कला ग्रामीण जीवन के गौरव, कठिनाइयों और परिश्रम को बिना अलंकरण के प्रस्तुत करती है।

यथार्थवाद की विशेषताएँ और ग्रामीण विषयों में उसका योगदान

myresearchgo Volume 1, December Issue 9, 2025, ISSN: 3107-3816 (Online)

यथार्थवाद का मुख्य उद्देश्य कल्पनाओं से परे जाकर जीवन के सच्चे और कड़े पक्षों को उजागर करना होता है। ग्रामीण जीवन पर केंद्रित मूर्तियाँ केवल सौंदर्य का प्रदर्शन नहीं करतीं, बल्कि वे संघर्ष, श्रम, सामुदायिकता और परंपरा की गहराई को छूती हैं। यथार्थवादी मूर्तिशिल्प में कुछ प्रमुख विशेषताएँ होती हैं:

सजीवता: मूर्तियों में चेहरे के हाव–भाव, शरीर की मुद्रा, और वस्त्रों की सूक्ष्मता इतने स्वाभाविक होते हैं कि वे जीवन का आभास देते हैं।

सामाजिक अंतर्दृष्टि: मूर्तियाँ केवल दृश्य नहीं होतींय वे सामाजिक ढांचे और वर्गीय असमानताओं का भी संकेत देती हैं।

स्थानीयता: प्रत्येक क्षेत्र की मूर्तिकला में वहाँ की बोली, पहनावा, रीति–रिवाज और लोकजीवन के पहलुओं का समावेश होता है, जो उसे स्थानीयता का बोध कराता है।

निष्कर्ष

भारतीय मूर्तिकला में ग्रामीण जीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति एक सशक्त सांस्कृतिक दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आती है। यह अभिव्यक्ति न केवल शिल्प की तकनीकी उत्कृष्टता को दर्शाती है, बल्कि ग्रामीण समाज की सादगी, संघर्ष, श्रम और जीवन दर्शन को भी जीवंत रूप में प्रस्तुत करती है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, मूर्तिकारों ने खेतों में काम करते किसान, पशुपालन, ग्राम्य मेले, स्त्रियों की दैनिक दिनचर्या, लोक–नृत्य और पर्व–त्योहारों को गहराई से चित्रित किया है।

यह अध्ययन दर्शाता है कि भारतीय मूर्तिकला, विशेषतः लोक और जनजातीय शिल्पकला, में ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों को वास्तविकता के निकट चित्रित करने की सतत परंपरा रही है। आधुनिक काल में यह यथार्थवादी दृष्टिकोण और अधिक सशक्त हुआ है, जहाँ मूर्तियाँ केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करने का माध्यम भी बन गई हैं।

इस प्रकार, मूर्तिकला के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण न केवल कला का सौंदर्य बढ़ाता है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विमर्श को भी समृद्ध करता है। यह अध्ययन निष्कर्षतः इस बात की पुष्टि करता है कि भारतीय मूर्तिकला ने ग्रामीण जीवन की सजीव और संवेदनशील अभिव्यक्ति के द्वारा देश की सांस्कृतिक विरासत को गहराई और विविधता प्रदान की है।

संदर्भ

1. मोहिन्द्र कुमार मस्ताना (2017) भारतीय मूर्तिकला का बदलता स्वरूप – एक परिचय , Volume VIII, No.2, pp 94-99.
2. मिश्रा, सुदीप (2010). भारतीय कला और स्थापत्य. पटनाः बिहार साहित्य अकादमी।
3. राजेश के जैन एट अल (2004) प्राचीन भारत में रॉक–कट मंडलीय स्थान, वास्तुकला विज्ञान समीक्षा, 2004, वॉल्यूम 47, अंक 2, पीपी 199–203।

4. लक्ष्मी गौतम (2019) ब्रज की आदि कालीन स्थापत्य कला एवम् मूर्ति कला, Volume 7, Issue 7, ISSN: 2455-6211.
5. वर्मा, अशोक (2018). आधुनिक भारतीय कला. मुंबईः महाराष्ट्र कला अकादमी।
6. शबनम एवं वर्षा रानी (2020) भारतीय मूर्तिशिल्प.रचनात्मक एवं कलात्मक अध्ययन, Volume 7, Issue 2 ISSN 2349-1817.
7. शर्मा, आर.एस. (2011) गुप्त कला और वास्तुकला. दिल्लीः ईस्टर्न बुक कॉरपोरेशन।
8. सविता वर्मा (2017) आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के अग्रदूत : रामकिंकर बैज, Volume 6, Issue 3, ISSN- 2456-4397.
9. सिंह, ए. (2020) आधुनिक भारत में शास्त्रीय मूर्तिकला का पुनर्जीवन. जयपुरः राजपूताना आर्ट प्रेस।
10. सुनीता गुप्ता और उमेश चंद्र (2022) मथुरा संग्रहालय में संग्रहीत कुषाण कालीन 'बोधिसत्व' मूर्तियों का अध्ययन, ISSN 2582- 7472.
11. सुचित्रा हरमलकर (2019) नृत्य में मूर्तिकला और चित्रकला के तत्वों का सौंदर्य, Volume 7, Issue 11 ISSN 2350-0530.
12. हरिनाथ द्विवेदी द्वारा लिखित ग्वालियर राज्य में प्राचीन मूर्तिकला पे0 690